https://doi.org/10.5281/zenodo.16995970 Scan QR to View Paper

वैदिक कालीन एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के स्वरूपों का तुलनात्मक अध्ययन

हिमाद्री शर्मा

सहायक प्रोफेसर
श्री दुर्गा शिक्षा निकेतन
गोमती नगर लखनऊ

सारांश

हमारे भारत की शिक्षा एवं शिक्षण व्यवस्था सर्व प्राचीन मानी जाती है। इसका प्रारंभ ऋग्वेद से हुआ था, जिसका उद्देश्य तत्व ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्ति था। तत्पश्चात यथा–यथा काल परिवर्तित हुए। शिक्षण के स्वरूप एवं शिक्षण व्यवस्था भी परिवर्तित होती चली गई। अतः प्राचीन भारतीय शैक्षिक व्यवस्था का क्रमिक विकास स्वाभाविक तौर पर हुआ। तत्पश्चात स्वाभाविक ढंग से माना जाता है कि इसमें सर्वप्रथम वैदिक काल से शिक्षा प्रारंभ हुई तत्पश्चात बौद्ध कालीन, मुस्लिम कालीन व स्वतंत्रता के पश्चात काल से होती हुई आधुनिक काल तक चली आ रही है। प्रत्येक काल में शैक्षिक व्यवस्था स्वाभाविक रूप से क्रमानुसार परिवर्तित होकर नया रूप धारण कर रही है। जैसे वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख तत्व गुरुकुल व्यवस्था थी, जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यवहारिक ज्ञान है। वर्तमान में इस ज्ञान को विद्यालयों व विश्वविद्यालय में प्राप्त किया जा रहा है। इस प्रकार 21वीं पीढ़ी की आवश्यकताओं के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए तरीकों को आधुनिक रूप प्रदान करने के लिए स्कूल एवं विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरुप छात्राओं के कौशल को इस प्रकार विकसित किया जा रहा है कि वह आत्मनिर्भर व महत्वाकांक्षी बन सकें।

प्रस्तुत शोध पत्र में दार्शनिक विधि का प्रयोग कर माध्यमिक शिक्षा स्तर पर वैदिक कालीन शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन कर आए परिवर्तन की विस्तृत व्याख्या की गई है।

प्रस्तावना

वर्तमान से लगभग 4000 वर्ष पूर्व भारतीय शिक्षा का बीजपत्र हुआ था परंतु उसके संबंधित स्वरूप के दर्शन वैदिक काल में प्रतीत हुए। प्राचीनतम भारतीय शिक्षा का प्रारंभ ऋग्वेद से हुआ। ऋग्वेद शिक्षा का उद्देश्य तत्व ज्ञान था। जिस व्यक्ति को चारों वेदों– ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता था। ऋग्वेद का रचनाकाल 500 ई०पू० है तथा तब से लेकर बौद्ध काल की शिक्षा प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत आता है। भारत में शिक्षा पुरातन है व इसकी जड़े विदेशी नहीं है। जिस समय विश्व के अन्य देशों के मनुष्य असभ्य जीवन व्यतीत कर रहे

थे उस समय प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्रचलन आरंभ हो गया था जो मानव के सर्वांगीण विकास तथा प्रगति के उत्थान हेतु महत्वपूर्ण समझी जाती थी। इसे सिद्ध करते हुए डॉ० एस डब्ल्यू थॉमस के कथनानुसार ऐसा कोई देश नहीं है जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीनतम समय से प्रारंभ हुआ हो व जिसने इतना परिवर्तनीय व सबसे सबल प्रभाव उत्पन्न किया हो। फिर चाहे वह वैदिक युगीन सामान्य कवियों की बात हो या आधुनिक युग में बंगाली दार्शनिकों, शिक्षकों व विद्वानों की शिक्षा का क्रम निर्विघ्न तरीके से चलता ही चला आ रहा है। यदि वैदिक कालीन शिक्षा काल की टिप्पणी की जाए तो 25 ई0पू0 से 500 ई0पू0 तक का काल वैदिक काल 500 ई0पू0 से 1200 ई0 तक का काल बौद्ध काल और 1200 ई0 से 1757 ई0 तक का कल मध्यकाल या मुस्लिम काल एवं 1757 ई0 से 1947 ई0 और इसके बाद का काल स्वतंत्रता के पक्ष के काल के नाम से उल्लेखनीय है, जो वर्तमान तक चल रहा है।

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शिक्ष धातु के रूप में शिक्ष से हुई जिसका अर्थ है सिखाना। शिक्षा अंग्रेजी शब्द "Education" का हिंदी रूपांतरण है जो लैटिन भाषा के एजुकेशन से वित्पन्न हुआ है इसका अर्थ है कि शिक्षण कार्य करना। अतः शिक्षा के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुए फ्रोबेल ने शिक्षा को एक प्रक्रिया कहा और फ्रोबेल के मतानुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक के आंतरिक गुणों का विकास करती है।

इसी प्रकार शिक्षा के व्यापक अर्थ को समझाते हुए प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री टी. रेमण्ड ने कहा है कि शिक्षा विकास का वह क्रम है जो बाल्यावस्था से परिपक्वता तक निरंतर चलता रहता है एवं शिक्षा में मनुष्य को अपनी आवश्यकता अनुसार धीरे–धीरे भौतिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। इस प्रकार शिक्षा जीवनपर्यंत चलने वाली वह क्रिया है जो मनुष्य में पाई जाने वाली जन्मजात शक्तियों का विकास कर मनुष्य के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर उसके व्यवहार को परिमार्जित करती है। इसी प्रकार जॉन लॉक ने शिक्षा की महत्ता को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि पौधों का विकास जुताई द्वारा तथा मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा व्यक्ति को प्रभावित करती है। शिक्षा को पर्यावरणीय कारक प्रभावित करते हैं। पर्यावरणीय कारकों की महत्व बताते हुए डॉ रवींद्र नाथ टैगोर ने कहा है कि भारत देश ही एक ऐसा अद्भुत देश है जिसकी संस्कृति एवं जलवायु इसकी प्रमुख विशेषता है। प्राचीन काल से ही मानव को पेड़–पौधों, झीलों, नदियों के संपर्क में रहने का अवसर प्राप्त हुआ और मानव को इसी एकांत वातावरण में खुले आकाश के नोचे शहर के कोलाहल से दूर शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिससे मानव की बुद्धि का विकास अत्यंत तीव्र गति से हुआ । इसी से भारत में दो महत्वपूर्ण कालों का जन्म हुआ– प्रथम वैदिक काल जिसे हम बौद्धिक कालीन शिक्षा के नाम से जानते हैं व द्वितीय है बौद्ध कला जिस हम बौद्ध कालीन शिक्षा के नाम से जानते हैं।

समस्या कथन –

वैदिक कालीन एवं आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के स्वरूपों का तुलनात्मक अध्ययन

शोध पत्र में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों की परिभाषा :–

वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था :– वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था वह व्यवस्था है जिसने शिक्षा का तात्पर्य वेदों के आधार पर शिक्षा का अर्थ ज्ञान व विद्या प्राप्ति है वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य तत्वज्ञान ब्रह्म ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति है। जो आत्मा अनुभूति से होती है।

आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था :– आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था व शिक्षा व्यवस्था है जिसमें स्वयं को संपूर्ण रूप देने के लिए सीखने को अनिवार्य माना जाता है। इसका उद्देश्य व्यवहारिक ज्ञान है जिसकी प्राप्ति देखकर, अनुभव कर व सीख कर होती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. वैदिक कालीन शिक्षण व्यवस्था एवं आधुनिक कालीन शिक्षण व्यवस्था के स्वरूप का अध्ययन करना

2. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन कर आए परिवर्तन की विस्तृत व्याख्या करना।

शोध विधि

शोधार्थिनी ने प्रस्तुत अध्ययन हेतु दार्शनिक विधि का प्रयोग किया है।

शोध सीमांकन :

तुलनात्मक अध्ययन हेतु शिक्षा के चारों स्तरों पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च में से केवल माध्यमिक स्तर को आधार के रूप में शामिल किया गया है।

वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था से आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था तक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत अध्ययन :

वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप :–

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली को गुरुकुल प्रणाली भी कहा जाता है। प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा के कई अर्थ लगाए जाते हैं, जैसे विद्या, ज्ञान। इस विषय में डॉक्टर अलतेकर ने शिक्षा को प्रकाश का वह स्रोत कहा है जो जोवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा को विद्या कहा गया क्योंकि विद्या द्वारा ही मुक्ति की प्राप्त होती है। शिक्षा को ज्ञान कहा गया क्योंकि ज्ञान द्वारा ही जीवन की वास्तविकताओं को समझता है तथा विद्या और ज्ञान द्वारा ही मानव आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर विनय सुख संपत्ति व पात्रता प्राप्त करता है। वैदिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा वह अंतर ज्योति है जिसके द्वारा मानव का शारीरिक बौद्धिक आध्यात्मिक एवं मानसिक विकास हो सकता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में वेदों के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर ही मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। प्राचीन काल में मानव जीवन का एकमात्र लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति

था, जिसका एकमात्र साधन वेद थे। इसलिए वेदों में शिक्षा से संबंधित यजुर्वेद की कुछ पंक्तियां निम्न है –

विद्या च विद्या च यस्तद्वेदोभ्य सह ।

अविद्या मृत्यु तीरर्वाविद्या मृतम श्रुते । ।

अर्थात जो मनुष्य विद्या और अविद्या दोनों को एक साथ जानता व समझता है। वह अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से अमित को प्राप्त करता है। बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप जागृति युग के नाम से प्रख्यात ईसा की छठी शताब्दी में हिंदू धर्म कर्म में बढ़ते दोष एवं वास्तविक धर्म के लोक के कारण दो कर्मों धर्म का उदय हुआ जिन्हें बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के नाम से जाना जाता है। महात्मा बद्धि ने जाति भेद को दूर करते हुए सभी मनुष्य में बहुत धर्म का प्रचार किया। मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में महात्मा बुद्ध ने यज्ञ आदि कर्मकांडों को दूर किया व उनके स्थान पर ज्ञान प्राप्ति, सत्य–अहिंसा, सदाचार व पवित्र जीवन को स्थान दिया। आरंभ में बौद्ध शिक्षा केवल बौद्ध अनुयाई ही प्राप्त करते थे परंतु धीरे–धीरे सभी मनुष्यों को इसमें शामिल कर लिया गया। बोद्ध धर्म में गौतम बुद्ध व्यावहारिक रूप से धर्म का पालन पर बल देते थे ताकि प्रत्येक मनुष्य का कल्याण हो सके। बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में मुक्ति की प्राप्ति हेतु अष्टांग योग साधन मार्ग को स्थापित किया गया है, ताकि प्रत्येक मनुष्य में सुंदर आचरण व्यवाहरत हो।

मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप :–

इतिहास का मध्य युग मुस्लिम युग के नाम से जाना जाता है डॉ० एम०ए० केई के अनुसार मुस्लिम शिक्षा वह विदेशी प्रणाली है जो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प संबंध रखकर नवीन भूमि के रूप में भारत में प्रचलित हुई । भारत में मुस्लिम शासको के स्थायित्व एवं मुसलमान के आक्रमण से भारतीयों का जनजीवन एवं शिक्षा पूरी तरह प्रभावित हुई। आरंभ में मुस्लिम शिक्षा केवल शहरों तक सीमित थी यहां तक की कुछ मुस्लिम शासको ने तो मंदिरों को नष्ट किया और हिंदू शिक्षा को समाप्त करने का प्रयास भी किया परंतु प्राचीन शिक्षा व्यवस्था व्यक्तिगत प्रयासों के कारण अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल हुई और मुस्लिम शिक्षा के होते हुए भी हिंदू शिक्षा का अस्तित्व जीवित रहा ।

स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात भारतीय शिक्षा प्रणाली का भी एक नया अध्याय आरंभ हुआ। स्वतंत्रता प्राप्त करन के पश्चात विषमता को दूर करने के लिए लोगों में चेतना जागृति हेतु लोकतंत्रात्मक अधिकारों और कर्तव्य के प्रति लोगों को जागष्त करने के लिए शिक्षा को नई दिशा प्रदान की गई। भारतीय आधुनिक शिक्षा प्रणाली का आरंभ ब्रिटिश शासनिक लार्ड कलिंगटन द्वारा 1830 में की गई। लॉर्ड कलिंगटन ने देश में अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया था जबकि प्राचीन शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम में केवल भाषा विज्ञान व गणित जैसे विषयों का समावेश था। अन्य विषयों का कोई स्थान नहीं था। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय शिक्षा प्रणाली जो पहले केवल कुलीन वर्ग हेतु उपलब्ध थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पूरे समाज हेतु उपलब्ध हुई इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता

प्राप्ति के पश्चात सरकार ने उच्च शिक्षा व माध्यमिक शिक्षा हेतु दो समितियां गठित की शिक्षा में आने वाली समस्याओं व चुनौतियों के समाधान हेतु व्यापक नीतियां भी तैयार की। आज भारतीय शिक्षा प्रणाली की चार प्रमुख स्तर है :– पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक।

वैदिक कालीन एवं आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन :

वैदिक कालीन तथा आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली में उद्देश्यों की तुलनाः–

1. वैदिक कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक भावना को विकास एवं मोक्ष की प्राप्ति था जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास है।

2. वैदिक काल की शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में से एक था– बालक का चरित्र निर्माण करना जो की शांत वातावरण में गुरुकुलों में किया जाता था और यह स्मरण रखा जाता था कि छात्र सादा जीवन उच्च विचारों वाला हो जबकि आधुनिक काल में भी शिक्षा के उद्देश्यों में एक चरित्र निर्माण है परंतु इस उद्देश्य ने प्रथम की स्थान पर गौड़ स्थान प्राप्त कर लिया है।

3. वैदिक कालीन शिक्षा में शिक्षा के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य जीविकोपार्जन है। छात्रों को तैयार करना था परंतु आधुनिक काल के शिक्षा के स्तर पूर्व निर्धारित हैं और छात्रों को उसी के अनुसार शिक्षा ग्रहण करनी होती है। छात्रों को कभी भी जीविकोपार्जन हेतु तैयार नहीं किया जा सकता। वैदिक काल की शिक्षा में वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं विकास में मुख्य रूप से ध्यान दिया जाता था जबकि आधुनिक काल में संस्कृति को बहुत महत्व दिया जाता है।

4. वैदिक कालीन शिक्षा सह अस्तित्व पर आधारित थी जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा व्यक्तिक विकास पर आधारित है।

5. वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य सैद्धांतिक थे जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य व्यावहारिक हैं। वैदिक कालीन शिक्षा का दृष्टिकोण आदर्शवादी था जबकि आधुनिक काल में शिक्षा का दृष्टिकोण व्यावहारिक है।

6. वैदिक कालीन शिक्षा सिद्धांत आदर्श केंद्रित थी जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा क्रिया केंद्रित है।

7. वैदिक कालीन शिक्षा में छात्रों की सामाजिक कुशलता के विकास अर्थात समाज के प्रति उनके कर्तव्यों के पालन की भावना का विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता था जबकि आधुनिक शिक्षा में सर्वप्रथम छात्रा के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान दिया जाता है। तत्पश्चात सामाजिक विकास पर ।

वैदिक कालीन एवं आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के पाठ्यक्रम की तुलना :–

1. वैदिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का निर्माण गुरु द्वारा तथा गुरु के समय के मांग के अनुरूप किया जाता था। जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का निर्माण राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय शिक्षा परिषद करती हैं और पाठ्यक्रम की निर्माण भी राष्ट्रीय एवं स्थानीय मांगों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

JOURNAL OF HUMANITIES & APPLIED SCIENCES
ISSN 2248-9673 Issue-2 Volume-XV, May-July 2025
PEER-REVIEWED JOURNAL

2. वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम धार्मिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक था जबकि आधुनिक शिक्षा का पाठ्यक्रम केवल भौतिक है।

3. वैदिक शैक्षिक पाठ्यक्रम छात्र केंद्रित नहीं था जबकि आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रम में छात्र की इच्छा एवं रुचि का विशेष ध्यान रखा जाता है।

4. वैदिक शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न वर्गों के लिए भिन्न–भिन्न शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित था उदाहरण स्वरूप ब्राह्मण हेतु पुरोहित शिक्षा, क्षत्रिय हेतु सैनिक शिक्षा वैश्य हेतु कृषि एवं व्यवसायिक शिक्षा आदि जबकि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में किसी भी विषय विशेष वर्ग हेतु कोई विशेष पाठ्यक्रम निर्धारित नहीं है। जबकि छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकता है।

5. वैदिक काल में प्रयोग व व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति हेतु करके सीखने पर बल दिया जाता था जबकि आधुनिक काल में शिक्षा के अंतर्गत क्रिया द्वारा अधिगम पर बल दिया जाता है।

6. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम आध्यात्मिक था जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली का पाठ्यक्रम भौतिक है।

7. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा के दो स्तर हैं–

1. परा (आध्यात्मिक) इसके अंतर्गत वेद वेदांग पुराण दर्शन उपनिषद दर्शन एवं नीति शास्त्र आदि को शामिल किया गया था

2. अपरा (लौकिक) इसके अंतर्गत इतिहास, औषधि शास्त्र, अर्थशास्त्र, ज्योतिश शास्त्र, भौतिक शास्त्र, प्राणी शास्त्र, रसायन शास्त्र, तर्कशास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, धनुर्विद्या, शल्य विद्या, सर्प विद्या, कप विद्या को शामिल किया गया था।

जबकि आधुनिक काल में शिक्षा के स्तर हैं।

पूर्व प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर

पूर्व माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर

उत्तर माध्यमिक स्तर

उच्च स्तर

उपरोक्त में से द्वितीय स्तर पर पाठ्यक्रम की अत्यधिक उपयोगिता है मध्य में एक स्तर पर पाठ्यक्रम निम्न है :–

1. पूर्व माध्यमिक स्तर – इसके अंतर्गत एक भारतीय भाषा गणित विज्ञान व सामाजिक अध्ययन आदि विषयों का समावेश है।

2. माध्यमिक स्तर – इसमें एक भारतीय भाषा, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, संगीत, चित्रकला, गृह विज्ञान आदि शामिल है।

3. उत्तर माध्यमिक स्तर –

इस स्तर पर एक भारतीय भाषा भौतिक विज्ञान गणित जीव विज्ञान गृह विज्ञान चित्रकला संगीत आदि समावेशित है।

8. वैदिक कालीन शिक्षा के अंतर्गत छात्राओं को केवल ललित कलाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था जबकि आधुनिक शिक्षण में छात्राओं को बहुआयामी कलाओं से प्रशिक्षित किया जाता है।

वैदिक कालीन एवं आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली की शिक्षण विधियां की तुलना :–

1. वैदिक शिक्षा प्रणाली में छात्राओं के ज्ञानात्मक पक्ष पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित होता था। अतः ज्ञानात्मक विषयों के विकास हेतु मुख्यतः व्याख्यान विधि प्रश्नोत्तर विधि, वाद–विवाद विधि संश्लेषण–विश्लेषण विधि, जैसी वीधियो का प्रयोग किया जाता था। जबकि आधुनिक समय में जितना ध्यान छात्र के ज्ञानात्मक पक्ष पर दिया जाता है उतना ही ध्यान उसके व्यावहारिक पक्ष पर भी दिया जाता है।

अतः व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तर विधि, विश्लेषण–संष्लेषण व वाद विवाद विधि के अतिरिक्त शैक्षिक भ्रमण विधि, प्रदर्शन विधि जैसी वीधिया का भी प्रयोग किया जाता है ताकि छात्र–छात्राओं को व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो सके।

2. वैदिक शिक्षा प्रणाली में क्रियात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था और इसी कारण प्रयोगात्मक शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं था। जबकि आधुनिक काल में व्यावहारिक पक्ष को विशेष महत्व दिया जाता है। अतः शिक्षण की नई–नई वीधियो का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे प्रदर्शन विधि, योजना विधि, प्रोजेक्टर विधि, अनुदेशन विधि, प्रयोगशाला विधि आदि ।

3. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का स्वरूप आधुनिक शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न था। अतः वैदिक काल मे शिष्य गुरुओं की गायों को चराते थे, लकड़ी काटते थे, फूल लाते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे और यही पाठ उनकी सहगामी क्रियाओं में शामिल था, जबकि आधुनिक समय में पाठ्य सहगामी क्रियाएं पहले की अपेक्षा बिल्कुल भिन्न हैं जैसे एन.सी.सी., खेलकूद स्काउट, क्विज, सेमिनार वाद–विवाद आदि ।

4. वैदिक काल की शिक्षा में अभियांत्रिकी का कोई स्थान नहीं था जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा में अभियांत्रिकी शिक्षा प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण संसाधन है। वैदिक काल की शिक्षा पूर्णतया मौखिक थी,

जबकि आधुनिक काल की शिक्षा मौखिक, लिखित व प्रयोग है। वैदिक कालीन शिक्षा में रटन विधि पर अधिक बल दिया जाता था जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा बोर्ड पर आधारित है।

वैदिक कालीन एवं आधुनिक शिक्षा में शिक्षक शिष्य के संबंधों की तुलना

1. वैदिक काल में शिक्षक शिष्य के संबंधों में सैद्धांतिक व भावनात्मकता थी जबकि आधुनिक काल में इसका प्रारूप भौतिकता पर आधारित है।

2. वैदिक शिक्षा में शिक्षक शिष्य के संबंध गुरु व पुत्र के समान थे जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक से इसका संबंध क्रेता–विक्रेता जैसे हो गए हैं जैसे उनके खाना–पीना, रहन–सहन, वस्त्र आदि। जबकि आधुनिक काल में शिक्षक इन जिम्मदारियां से मुक्त हैं तथा शिक्षण क्रिया का वेतन भी लेते हैं ।

5. वैदिक काल में छात्र शिक्षक के प्रातः काल सुबह उठने से पूर्व से लेकर देर रात सोने के बाद तक के सभी कार्य प्रसन्नता पूर्वक करते थे। जबकि आधुनिक काल में ऐसा नहीं है।

वैदिक कालीन एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय प्रबंधन एवं प्रशासन की तुलना

1. वैदिक काल में शिक्षा गुरुकुलों मे दी जाती थी जहां छात्र अपना समस्त शैक्षिक कार्य करते थे जबकि आधुनिक काल में गुरुकुलों का स्थान विद्यालयों ने ले लिया है।

2. वैदिक काल में शिक्षण व्यवस्था वर्णों में विभाजित थी हर वर्ग को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। अतः गुरुकुलों की संख्या सीमित थी। जबकि वर्तमान में शिक्षा प्राप्त करने का सभी को समान अधिकार है। अतः विद्यालयों की संख्या अधिक है।

3. वैदिक काल में सीमित पाठ्यवस्तु सीमित विषय व कम पाठ्य सहगामी क्रियाएं होने के कारण गुरुकुल सेवा में परिपूर्ण थे। जबकि आधुनिक काल में शिक्षक के बीच स्तर तीनों स्तरों पर भिन्न–भिन्न विषय भिन्न–भिन्न विषयों में अधिक पाठ है। वस्तु तथा भिन्न–भिन्न प्रकार की पाठशाला की पाठ्य सहगामी क्रियाएं होने के कारण विद्यालयों की संख्या में निरंतर वषद्धि होती जा रही है।

4. वैदिक काल में छात्रों के प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के विकास की व्यवस्था गुरुकुल में ही थी जबकि आधुनिक समय में माध्यमिक विद्यालय में एक निश्चित स्तर की शिक्षा का ही प्रावधान है।

निष्कर्ष

वैदिक कालीन शिक्षा वेदों पर आधारित थी इसका मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति था, जबकि आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली व्यवस्था पर आधारित है इसका मुख्य उद्देश्य छात्राओं का सर्वांगीण विकास है। वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम अध्यात्मिकता एवं धार्मिकता पर आधारित था, जबकि आधुनिक शिक्षा भौतिकता पर आधारित है। वैदिक शिक्षा, शिक्षक केंद्रित शिक्षा थी, जिसमें शिक्षक का स्थान

सर्वोपरि था जबकि आधुनिक शिक्षा, छात्र केंद्रित है। अर्थात छात्र सर्वोपरि है व शिक्षक का स्थान गौड़ है। वैदिक काल की शिक्षा में ज्ञानात्मक पक्ष के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाता था जबकि आधुनिक काल की शिक्षा व्यवहारिकता उपयोगिता पर आधारित है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाए जाने के कारण शिक्षक वैदिक काल में व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तरी व वाद–विवाद विधियो का प्रयोग शिक्षा के लिए करते थे। जबकि प्रयोग दृष्टिकोण के कारण आधुनिक काल में प्रोजेक्ट विधि, भ्रमण विधि, प्रदर्शन विधि व प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग शिक्षक, शिक्षा के लिए करते हैं। आधुनिक काल में शिक्षक मात्र वेतन भोगी है तथा वैदिक काल में शिक्षण व्यवस्था का स्वरूप आधुनिक काल की अपेक्षा पारिवारिक था तथा वर्तमान में यह स्वरूप भौतिकता में परिवर्तित हो गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जायसवाल, डॉ० सीताराम भारतीय शिक्षा पद्धति का विकास एवं चुनौतियां, प्रकाशन केंद्र लखनऊ।

2. अग्रवाल, डॉ० शरद कुमार 'वैदिक एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन'

3. अग्रवाल, एस० के० 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत', मॉडर्न पब्लिकेशन, मेरठ।

4. शर्मा, अलका, वैदिक काल से आधुनिक शिक्षा पद्धति तक जीवन कौशल एवं पाठ्यक्रम में परिवर्तनशील प्रतिमानः एक अध्ययनः डॉक्टररेट की उपाधि हेतु शिक्षा विभाग ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय. जयपुर, राजस्थान ।

5. गुर्जर गोपाल. 'वैदिक कालीन अध्ययन व्यवस्था की वर्तमान प्रासंगिकता : एक शिक्षा शास्त्री मीमांसा.

6. अल्तेकर, डॉ० अनंत सदाशिव **प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति** वाराणसी. नंदकिशोर एवं ब्रदर्स.

7. चौब. एस. पी. 'भारतीय शिक्षा का इतिहास विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.

8. त्रिपाठ, शोभना. 'वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएं तथा उद्देश्य

9. श्रीवास्तव, अमित (2018) भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक एक

10. सोनी, अनिल (2021). वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली व वर्तमान शिक्षक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

JOURNAL OF HUMANITIES & APPLIED SCIENCES
ISSN 2248-9673 Issue-2 Volume-XV, May-July 2025
PEER-REVIEWED JOURNAL